❑ अनामिका

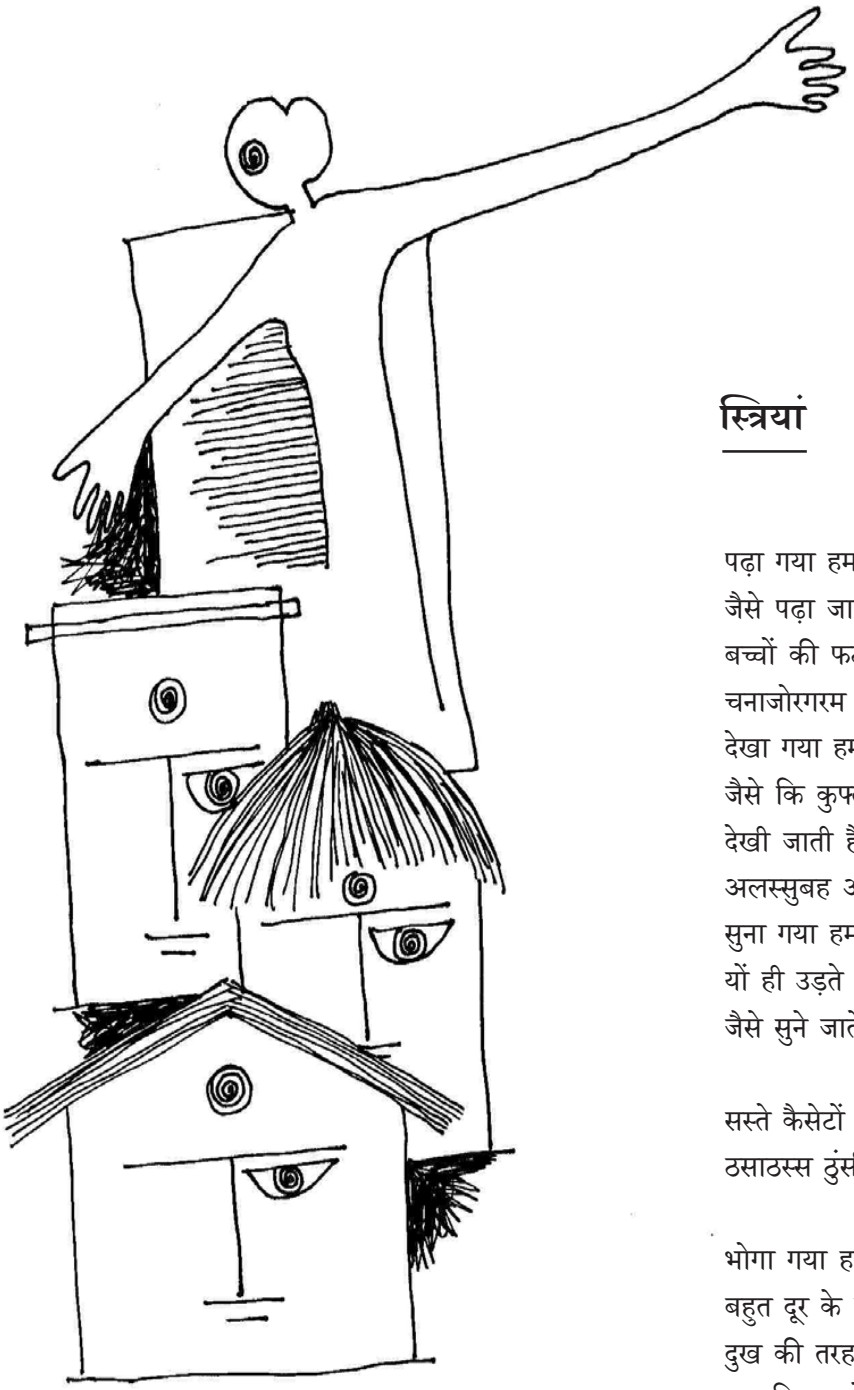

स्त्रियां

पढ़ा गया हमको
जैसे पढ़ा जाता है कागज
बच्चों की फटी कॉपियों का
चनाजोरगरम के लिफाफे बनाने के पहले !
देखा गया हमको
जैसे कि कुफ्त हो उनीदे
देखी जाती है कलाई घड़ी
अलस्सुबह अलार्म बजने के बाद !
सुना गया हमको
यों ही उड़ते मन से
जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाने

सस्ते कैसेटों पर
ठसाठस्स ठुंसी हुई बस में !

भोगा गया हमको
बहुत दूर के रिश्तेदारों के
दुख की तरह !
एक दिन हमने कहा

हम भी इंसा हैं-
हमें कायदे से पढ़ो एक-एक अक्षर
जैसे पढ़ा होगा बीए के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन !

देखो तो ऐसे
जैसे कि ठिठुरते हुए देखी जाती है
बहुत दूर जलती हुई आग!

सुनो हमें अनहद की तरह
और समझो जैसे समझी जाती है
नई-नई सीखी हुई भाषा !

इतना सुनना था कि अधर में लटकती
हुई
एक अदृश्य टहनी से
टिड्डियां उड़ीं और रंगीन अफवाहें
चींखती हुई चीं-चीं
'दुश्चरित्र महिलाएं, दुश्चरित्र
महिलाएं–
किन्हीं सरपरस्तों के दम पर फूली फैली
अगरधत्त जंगली लताएं !
खाती-पीती, सुख से ऊबी
और बेकार बेचैन, आवारा महिलाओं
का ही
शगल है ये कहानियां और कविताएं...।
फिर ये उन्होंने थोड़े ही लिखी हैं ।'
(कनखियां इशारे, फिर कनखी)
बाकी कहानी बस कनखी है।
हे परमपिताओं,
परमपुरुषों-
बख्शो, बख्शो, अब हमें बख्शो !

भिन्न

मुझे भिन्न कहते हैं-
किसी पांचवीं कक्षा के क्रुद्ध बालक की
गणित-पुस्तिका में मिलूंगी-
एक पांव पर खड़ी-डगमग!

मैं पूर्ण इकाई नहीं-
मेरा अधोभाग
मेरे माथे से जब भारी पड़ता है-
लोग मुझे मानते हैं ठीक-ठाक,
अंगरेजी में 'प्रॉपर फ्रैक्शन'!

अगर कहीं गलती से
मेरा माथा
मेरे अधोभाग से भारी पड़ जाता है-
लोगों के गले यह नहीं उतरता
और मेरे माथे पर बट्टा लग जाता है-
'इंप्रॉपर फ्रैक्शन' का!

क्या माथा अधोभाग से भारी होना
इतना अनुचित है - मेरे मालिक, मेरे आका ?

क्या इससे मेरी बढ़ जाती है दुरूहता ?
कितने बरस अभी और रहेंगे आप
इसी पाँचवी कक्षा के बालक की मनोदशा में-
लगातार मुझे काटते-छांटते,
गोदी में मेरी
नन्हीं इकाइयां बिठाकर
वही लंगड़ी भिन्न बनाते-
तीन होल नंबर, फलां बटा फलां ?
कब तक बंटना, कब तक छंटना-
देखिए मुझे अपनी अंतिम दशमलव तक
- फिर कहिए, क्या मैं बहुत भिन्न हूं आपसे ?

('कहती हैं औरतें' संग्रह से साभार)